प्रश्न ÷ वर्ष 1919 के रौलेक्ट एक्ट के खिलाफ किसने आन्दोलन किया

→ G.B. पन्त

कुमाऊं परिषद् के नेतृत्व में कुमाऊं में भी 'रौलेक्ट एक्ट' का कड़ा विरोध हुआ। 1920 अप्रैल में चौरगलिया में एक सभा हुयी। सभा में G.B पन्त के नेतृत्व में पं तारादत्त गैरोला व जयदत्त शामिल हुये। 6 अप्रैल को काशीपुर में हुए सभा में G.B पन्त ने जालियाँवाला बाग की घटना की कटु भर्त्सना की तथा रौलेक्ट एक्ट की बुराइयों पर प्रकाश डाला

G.B पन्त ÷ G.B पन्त का जन्म 10 Sep 1887 को अल्मोड़ा जनपद के खूंट ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम मनोरथ पन्त था। 1923 में पन्त जी स्वराज पार्टी के टिकट पर संयुक्त प्रान्त U.P के लिए निर्वाचित हुए तथा 7 वर्ष तक विरोधी दल के नेता के रूप में कार्य किया। 1931 में इन्होंने सुप्रसिद्ध 'पन्त प्रतिवेदन' प्रस्तुत किया जो पन्त कमेटी रिपोर्ट के नाम से प्रसिद्ध हुआ। पंत जी 1937 से 39 व 1946–1954 के U.P के CM रहे तथा 1955 से 1961 तक केन्द्रीय गृह मन्त्री रहे। सन् 1957 में इन्हे भारत रत्न दिया गया।

पंत जी गोपाल कृष्ण गोखले को अपना राजनैतिक गुरु मानते थे। पंत जी उदारवादी थे किन्तु वे उग्रवादी विचारो का भी सम्मान करते थे उन्होने काकोरी काँड के अभियुक्तो रामप्रसाद, राजेन्द्र लाहड़ी, व रोशन सिंह की पैरवी की थी।

Gandhi जी पन्त से बहुत प्रभावित तथा उनके लिए उक्त कथन कहा– "फिरोज मेहता हिमालय के समान विशाल है, तिलक समुद्र के समान गंभीर, गोखले गंगा के समान सरल, परन्तु पन्त में इन तीनो गुणो का समावेश मिलता है"

पन्त जी ने 1914 में काशीपुर में प्रेमसभा की स्थापना की थी। नेहरू के प्राणो की रक्षा करने पर नेहरू ने इन्हे हिमालय पुत्र कहा था। इनके मित्र इन्हे गोविन्द बल्लभ (महाराज) कहते थे।

पंत जी की मृत्यु पर नेहरू जी ने कहा था – पन्त 'बवंडरों' में रास्ता दिखाने वाली रोशनी के सदृश थे।

प्रश्न ÷ जागेश्वर धाम किस नदी के किनारे स्थित है?
जटागंगा

जागेश्वर धाम → कुमाऊ मण्डल के प्रमुख देव स्थलों में जागेश्वर धाम को उत्तराखण्ड का पाँचवा धाम भी कहा जाता है। पौराणिक मान्यता के अनुसार यह मन्दिर भगवान शिव की तपस्थली है। यहाँ 124 छोटे-बड़े मन्दिरों का समूह जो लगभग सभी केदारनाथ शैली में बने है। इस मन्दिर का निर्माण 8वीं-10वीं शताब्दी में कत्यूरी राजा शालिवाहन देव ने करवाया था। जिसमें नवदुर्गा, सूर्य, हनुमान, कालिका, चंडिका कुबेर, जगन्नाथ, मृत्युंजय व डंडेश्वर मन्दिर आदि है। महामृत्युंजय मन्दिर सबसे पुराना व डंडेश्वर मन्दिर सबसे बड़ा मन्दिर है। वर्ष 2005 में केन्द्रीय पर्यटन विभाग ने इसको ग्रामीण पर्यटक स्थल के रूप में विकसित करने के लिए चयनित किया था। शंकराचार्य ने यहाँ शक्ति पीठ की स्थापना की थी।

रामगंगा पूर्वी ÷ यह नदी, पिथौरागढ़ जनपद के पोटिंग व नामिक हिमानी से निकलकर रामेश्वर तीर्थ के पास सरयू से मिलती है। भुजपत्रीगाड़, गारगतिया, कालापानी गाड़ तथा खेल गाड़ इसकी प्रमुख सहायक नदियाँ है।

कालीगंगा ÷ काली नदी का प्रवाह तंत्र पूर्णतः कुमाऊ मण्डल में स्थित है। यह नदी पिथौरागढ़ के उत्तर में लिपूलेख के पास स्थित कालापानी (व्यास आश्रम) स्थान से निकलती है स्थानीय भाषा में इसे कालापानी गाड़ या काली गंगा कहा जाता है। यह नदी कालगिरी पर्वत के समान्तर तथा भारत-नेपाल का बार्डर बनाते हुए पिथौरागढ़ के बाद चम्पावत में प्रवेश करती है तथा तनकपुर चम्पावत के निकट पूर्णागिरी तीर्थ के पास बरमदेव मंडी के पास शारदानदी के नाम से नेपाल में प्रवेश करती है।